अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

वर्ष : ४६ अंक : ०५-०६ वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढ़ वि.सं.-२०७६ मई-जून, २०२०(संयुक्तांक) पृष्ठ २८ RNI 43602/77 ISSN No. 2581-981X

घर-घर में पोथी घर

❑❑❑

कोरोना काल में घर-घर पोथी घर बनाये जाने का प्रयास समिति ने प्रारंभ किया है। समिति के घने वृक्षों वाले परिसर में किताबों की थड़ी नियमित लगायी जा रही है। इसका उद्देश्य लोगों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना एवं पढ़ने की रुचि जगाना है। किताब की इस थड़ी में बड़े-बड़े स्लोगन लिखे होर्डिंग समिति के बाहर तथा अंदर लगाये गये हैं।

यह एक ऐसा अभियान है जो घर घर को पोथी घर बनाने में विश्वास रखता है। हमारी कोशिश है कि ज्यादा से ज्यादा लोग कोराना के इस काल में किताबें पढ़कर निर्भय हो सकें और मन में उपजे विषाद से उबर सकें।

❑

दया बाई

❑

दोहा

गुरु-सब्दनकूं ग्रहन करि, विषयनकूं दे पीठ।
गोविंदरूपी गदा गहि, मारो करमन डीठ।।१।।

सूरा वही सराहिये, बिन सिर लड़त कबंद।
लोक-लाज कुल-कानकूं, तोड़ि होत निर्बंद।।२।।

सुनत सब्द नीसानकूं, मन में उठत उमंग।
ज्ञान-गुरज हथियार गहि, करत जुद्ध अरि संग।।३।।

सतगुरु सम कोउ है नहीं, या जग में दातार।
देत दान उपदेस सों, करैं जीव भव-पार।।४।।

मनसा वाचा करि दया गुरुचरनों चित लाव।
जग-समुद्र के तरन कूं, नाहिन आन उपाव।।५।।

सतगुरु ब्रम्हसरूप हैं, मनुषभाव मत जान।
देहभाव मानैं दया, ते हैं पसू समान।।६।।

❑

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : ४६ अंक : ५-६ • वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढ़ वि.सं.२०७६ • मई-जून, २०२० (संयुक्तांक)

क्र म

05 | अपनी बात
अब हमें लौटना होगा...

07 | विरासत
हरबोला गाए-सत कथा सुनाए

11 | व्यथा-कथा
जब इंसानियत का दम घुट रहा था

12 | आलेख
क्या है कोरोना ?

14 | कविता
हूबनाथ की कविता

16 | आलेख
आज की जरूरत : ऑनलाइन शिक्षा

18 | लेख
तालाबंदी में बच्चों की शिक्षा

20 | जाति विरोधी योद्धा
अय्यंकली को याद करेंगे !
जाति प्रथा का नाश करेंगे !

22 | समिति समाचार
क्या हो रहा है समिति में?

25 | पिछला पन्ना
मौलश्री के संग...

पाठक क्षमा करें

अनौपचारिका का मई-जून, २०२० (संयुक्तांक) कोरोना काल की विवशता के कारण विलम्ब से प्रकाशित हो रहा है। पाठक इस देरी के लिए क्षमा करें। ❑ सं.

संस्थापक संपादक एवं संरक्षक : रमेश थानवी | कार्यकारी संपादक : प्रेम गुप्ता | प्रबंध संपादक : दिलीप शर्मा

वार्षिक शुल्क तीन सौ पचास रुपये | संस्थागत वार्षिक शुल्क पांच सौ रुपये | मैत्री समुदाय तीन हजार रुपये

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति

७-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र, जयपुर-३०२००४
फोन : २७००५५६, २७०६७०६, २७०७६७७
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com

अब हमें लौटना होगा...

मित्रो, अब समय आ गया है। हमें लौटना ही होगा अपनी ओर। अपने देश, समाज, परिवार और गांव की ओर। अब बाजारों का और बड़े शहरों का आकर्षण हमें भरमा नहीं सकता। क्योंकि हमने स्वयं कोरोना के इस महाकाल को जीया है और अनुभव भी कर लिया है, कि किस प्रकार आदमी के अंहकारी और स्वार्थी दिमाग ने पूरी दुनिया में भूचाल खड़ा कर दिया है!! हम सभी डर गये हैं, यहां तक कि अपने से, अपने मित्रों से, अपने परिवार और अपने सगे संबंधियों से।

प्रकृति के प्रदूषित होने के परिणाम भी आज हमारे सामने हैं और उसके सब नतीजे भी हम देख रहे हैं। हमने कुदरती संसाधनों का जितना दुरुपयोग किया उतना ही हमारे स्वास्थ्य पर, हमारे मन मस्तिष्क पर, यहां तक कि पूरे जीवन पर उसका दुष्प्रभाव हुआ।

आज हमारे सामने प्रश्न यह है कि इस कोरोना-काल में शिक्षा क्या करे? प्रश्न यह भी है कि शिक्षा समाज को इस विनाशकारी विषाणु से बचना कैसे सिखाये और प्रश्न यह भी है कि इस विषाणु के फैलने के बाद भी समाज को भय-मुक्त कौन करे? विषाद से कौन बचाये?

पिछले दिनों कोरोना के चलते यह अनुभव हुआ कि मनुष्य को जीने के लिए कितनी कम वस्तुओं की आवश्यकता है। यह भी आभास हुआ कि हम अब तक कितनी विलासिता भरी चीजों का इस्तेमाल करते रहे हैं।

इस समय की सबसे ज्यादा दुखद स्थिति तो यह थी कि हजारों मजदूर मौत के मुंह में धकेल दिए गए। इनमें जो रजिस्टर्ड मजदूर थे, कृषक थे, उनके लिए तो ऐसा मान भी लिया जाए कि भोजन, पानी पहुंच रहा था, लेकिन यहां बड़ा सवाल यह है कि जो श्रमिक और मजदूर रजिस्टर्ड नहीं थे, उनका क्या हुआ?

यह विकट स्थिति केवल भोजन और पानी की व्यवस्था करने मात्र की ही नहीं थी बल्कि पूरी दुनिया की थी। ऐसी डराने वाली स्थिति में डॉक्टर्स, नर्स, पैरामेडिकल स्टाफ और जो कर्म योद्धा जी-जान से अपनी सेवाएं दे रहे थे, उन्हें भी अपने आपको सुरक्षित रखने के साधन उपलब्ध नहीं हो पाए!! उनके संक्रमित होने का खतरा और भी बढ़ गया । और ऐसे में जो कर्म योद्धा अपनी जान को खतरे में डालकर लोगों की सेवा में जुटे हुए थे, ऐसी संस्थाएं जो अपना भरपूर सहयोग दे रही थी उनमें भी बहुत सारे लोग **कोरोना से संक्रमित** हो गए।

ऐसी स्थिति में हम पलायन कर रहे श्रमिकों और मजदूरों की बात ही क्या करें? जब वे अपने घरों की ओर लौट रहे थे उन्हें देखकर तो रूह कांप गई थी । हमारे देश का असली चेहरा हमारे सामने था । यह हमें सोचने को मजबूर कर रहा था कि आज हम कहां हैं? क्या हम विकसित हैं? सबसे बड़ा सवाल सामने खड़ा मुंह चिढ़ा रहा था कि यह ऐसी कौन सी दौड़ है जिसमें हम दौड़ कर आगे जाना चाहते हैं।

आज हमें वापस लौटने की जरूरत आ पड़ी है। आज हमें लौटना होगा-अपने **कुटीर उद्योगों** की ओर। जो हमारे गांव के प्रमुख जीविका के आधार थे। हमें बापू का चरखा करघा सब याद आ रहा था- बापू ने हाथकरघा जैसे कुटीर उद्योगों को दिल से अपनाया था। गांधी का चरखा और उसके साथ जुड़े हजारों हजारों लोगों का आत्मविश्वास जिसने देश को आत्मनिर्भर बना दिया था और देश में स्वतंत्रता की अलख जगा दी थी।

हमारे सामने अब सबसे बड़ी चुनौती जीवन शैली को बदलने की है और इसके साथ ही एक और बड़ा बदलाव लाने की भी है जो हमारी मन-स्थिति का जायजा ले सके।

ऐसे समय में हमें **महावीर के अर्थशास्त्र** पर विचार करने की जरूरत है। जो हमारी अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा दे सके। इसके लिए अपरिग्रह सरल और सादा जीवन जीने की अनिवार्यता बन गई है।

हमें कोरोना से दूर रहना है, दिलों से नहीं । यह सही है कि कोरोना से हमें खुद को तो सुरक्षित रखना ही है साथ ही साथ अपने परिवार समाज और राष्ट्र को भी ।

मुझे इस बात की बहुत चिंता हो रही है और मन में पीड़ा भी है कहीं हम खुद को बचाते बचाते विषाद में ना आ जाए यदि ऐसा हुआ तो यह स्थिति और भी भयावह होगी। उस स्थिति में तो हमारा न केवल मनोबल कम होगा बल्कि मानव दिलों में प्यार, आदर, सम्मान की जगह हम भ्रमित हो जाएंगे, शंकालु हो जाएंगे इतना ही नहीं एक **बड़े मानसिक रोगी** भी हो सकते हैं। डिप्रेशन का शिकार भी हो सकते हैं।

मेरे विचार से तो ऐसे समय में केवल इम्यूनिटी अर्थात् रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने से काम नहीं चलने वाला । यह बात तो शरीर के रोगों से लड़ने की ताकत की है लेकिन हमें इससे भी ज्यादा मन से मजबूत होने की जरूरत है। खुद को जागृत करने की जरूरत है । ना केवल खुद को जगाने की जरूरत है बल्कि समाज और देश में जागृति लाने की भी जरूरत है।

शिक्षा का काम मन को मन से जोड़ना है। यह जीवन की पाठशाला है । सच ही तो है **मन के जीते जीत है मन के हारे हार** । मैं तो फिर से एक बार यही कहूंगी कि आओ, अब लौट चलते हैं हम उसी सादा और सरल जीवन की ओर। जो जिया था हमारे पूर्वजों ने अपनी **मेहनत** और **जीवटता** के साथ । ❑ **प्रेम गुप्ता**

हरबोला गाए – सत कथा सुनाए

सुरेन्द्र बांसल

❑

हरबोलो की प्रथा पुरानी है। गांव-गांव तक संदेश पहुंचाने के लिए पुरातन परम्परा है यह। समाज के द्वारा पोषित और संचालित। हरबोले स्वस्थ और बलिष्ठ नौजवान हुआ करते थे। जो पैदल चलकर एक गांव से दूसरे गांव तक संदेश पहुंचा आते थे। इनके द्वारा दिया जाने वाले संदेश सर्वथा प्रमाणिक होता था। सच होता था। इसी प्रथा के बारे में विस्तार से विचार करते हुए लिखते हैं श्री सुरेन्द्र बांसल। आज के कोरोना काल में इस प्रथा का स्मरण बहुत उचित जान पड़ता है। ऐसा भी लगता है कि आज भी ऐसा संभव हो जाये तो शायद हम और हमारा समाज दूसरी तरह के परावलम्बन से बच जायेगा। ❑ सं.

हमारी अनेक पीढ़ियां सुनती आई हैं कि भारत विश्व गुरु था, अतीत में झांक कर देखते हैं तो लगता भी है कि अवश्य होगा भी। आज भी करोड़ों भारत वंशियों का यह सपना है कि भारत फिर से उसी विश्वगुरु के सिंहासन पर पुनः आरूढ़ हो। लेकिन अपनी संस्कृति, परम्पराएं, साहित्य, लोक कलाओं और लोक कलाकारों को विस्मृत करके कौन सा देश 'विश्व गुरु' का ताज सर पर रख पाया है? निस्संदेह हमारी गुलामी का काल लम्बा और खूब उथल-पुथल भरा था। ऐसे दौर के बाद अनेक पीढ़ियां उदासी में भी डूब जाती हैं, लेकिन स्वतंत्र भारत के पहले कुछ वर्षों में 'भारत विश्वगुरु या स्वर्णिम भारत' क्यों और कैसे था, इस पर अवश्य विचार किया जाना चाहिए था और उसी अनुरूप नीतियां भी बननी चाहिए थीं। लेकिन अफ़सोस वह सब नहीं हुआ। लेकिन आज हम स्वदेशी, संस्कृति और परम्परा की चाशनी में रचे पगे लोगों की सरकारों के दौर में हैं। लेकिन ढाक के तीन पात ज्यों के त्यों हैं।

आज़ादी के बाद सबसे बड़ी अनीति तो यही बनी कि हमने अपने प्रिय देश के 'स्वधर्म' को विस्मृत कर दिया, किताबों से देश ही लगभग ग़ायब कर दिया। जब देश ही ग़ायब कर दिया तो देश की नदियों, तालाबों, पहाड़ों, पेड़ पौधों के सुन्दर-सुन्दर नाम भी ग़ायब तो होने ही थे। सबसे भयंकर आरी उन गुणी लोगों पर चली जिन्होंने बिन पानी के प्रदेशों में भी सुंदर झीलें, तालाब, क़िलों के साथ-साथ ऐसा जीवन संगीत भी रचा जो किसी बेजान में भी प्राण फूंक सकता है। ऐसे भारत का निर्माण करने वाली असंख्य जातियां वोट की राजीति के लिए गिनीं तो गईं लेकिन अपने दिव्य गुणों के बावजूद विस्मृत कर दीं गईं। ऐसी ही एक जाति 'हरबोलों' की थी।

कल्पना कीजिए किसी दिन सुबह-सुबह आपके द्वार पर सीधे-सादे पहरावे वाला कोई गायक आकर मंजीरे पर गीत गाने लगे- गीत भी साधारण नहीं बल्कि सत्य की स्तुति में, सच के लिए प्राण देने वाले लोगों की यश गाथा, वो आपसे कोई भिक्षा नहीं मांगेगा। इतना ही कहेगा ''हरबोला गाता है-सत कथा सुनाता है'' एक मंजीरे की टिक-टिक टिन-टिन ध्वनि पर लय बनाकर स्वरचित, श्रवण कुमार की कथा, राजा हरिश्चंद्र की कथा या ऐसी ही कोई प्रेरणा दायक जीवन गाथा आपको सुनाकर आल्हादित कर दे, समझिए वो हरबोला है। हर का अर्थ प्रसन्न करना होता है और ये ध्यय छंद का प्रकार भी है– हरबोला याने

आज का संदेश

आज के हरबोलों के नाम

❑

जो पहर्‌या सो फाटिसी,
नांव, धर्‌या सो जाई।
कबीर सोई तंत गहि,
जो गुर दिया बताई।।

जो ऊग्या सो आंथिवै,
फूल्या सो कुमिलाई।
जो चिणियां सो ढहि पड़ै,
जो आया सो जाइं।।

पांणी केरा बुदबुदा,
इसी हमारी जात।
एक दिनां छिप जांहिंगे,
तारे ज्यूं परभाति।।

कबीर यहु जग कुछ नहीं,
छिन छारा छिन मींठ।
काल्हि जो बैठा माड़ियां,
आज मसांणां दीठ।।

❑

–कबीर

प्रशंसा के गीत गाने वाला या छंद गायक। किसी एक गांव में होने वाले अच्छे काम को दूसरे गांवों में जाकर गा-गा कर सुनाना ताकि उस गांव के लोग भी अपने परिवेश को बेहतर से बेहतर बनाने में जुटें- ऐसे हरबोले आज विस्मृत हो चले हैं।

चारण, भाट या प्रशस्ति गान की परंपरा प्राचीन काल से हमारे देश में विद्यमान थी। सारंगी या दो तार की रेंकड़ी बजाते नाथ या जोशी लोग आज भी मालवा, निमाड़ के गांवों में, शहरों में मिल जाते हैं जो मूलत: निर्गुण परंपरा के शिव के भजन गाते हैं, इनका पहनावा जोगी जैसा होता है। नाथ परंपरा के ये भक्तिगान गायक देशभर में अलग-अलग रूपों में मिल जाते हैं, बंगाल की बाउल, कीर्तन, शैली, उड़ीसा के कथा गायक, महाराष्ट्र, आंध्र की बुर्रा कथा, हरिकथा इसी के परिमार्जित सैष्ठव वाले स्वरूप बन गए।

बुंदेलखंड और बघेलखंड में इसी शैली के बसदेवा गायक भी मिलते हैं जो पीले वस्त्र पहनते हैं और लोकभाषाओं में कृष्ण की गाथाएं सुनाते हैं। हरबोला इनसे अलग और विशिष्ट इसलिए हो गए कि हरबोला कुछ खास गाथा गायन पर अपने को केन्द्रित कर घूमने लगे।

गुलामी के दौर में सेना के साथ उनका मनोबल बढ़ाने वाले, जोश भरने वाले गायक वादक रहते थे। मराठा सेनाओं के साथ पॉवाड़ा या लावणी शैली के गायक चलते थे। समय के साथ यही शैलियां मध्य-भारत के लोकमानस में भी प्रचलित हो गईं। बुंदेलखंड में एक हज़ार साल पहले आल्हा रचा गया उसी की छंद परंपरा बाद में रायसो गायन के रूप में विकसित हुई। मध्यकाल में कई रासो लिखे गए जिनमें पृथ्वीराज रासो, उल्लेखनीय है। महान स्वाधीनता संग्राम सेनानी झांसी की रानी पर भी लक्ष्मीबाई रायसो लिखा गया जो उपलब्ध है।

अंग्रेज़ों के खिलाफ जब स्वाधीनता की अलख जगाई जा रही थी तब लोक रचनाकार और लोकगायक अपनी गायकी से सामान्य जन को जाग्रत कर रहे थे। ये अपनी कविताएं तीस या बत्तीस मात्रा के चरण में रचते थे। मूलत: ये आशु कवि थे, जिस गांव में जाते, घूम फिर कर गांव बाहर पेड़ के नीचे या चबूतरे पर अपना डेरा जमाते। जब गांव के मुखियों द्वारा उनका आदर सत्कार होता फिर वे अपना गायन सबको सुनाते। गांव भर की ओर से उनको सम्मान सहित अनाज आदि भेंट दी जाती।

स्वाधीनता आंदोलन में जब घर-घर रोटी और कमल पहुंच रहा था। ये ओज भरे गायक अपने शौर्यगीतों से जनता तक संदेश पहुंचा रहे थे। अंग्रेज सिपाही, अफसर या चाकर दिख जाने पर गीतों में कुशलता से फेर बदल करके हर गंगा हर गोपाल, हर के भजन सुनो दो चार, गाने लगते थे। देश की परंपरा और संस्कृति को अपने गीतों का आधार बनाते थे। अंग्रेजों को अपने

गीतों में निशाचर, राक्षस, असुर, टोप या टोपीवाला दिखाकर उनसे लड़ने की प्रेरणा देते थे।

अंग्रेजों से राजा पारीछल की लड़ाई उनके काव्यगायन का आधार बनी। बाद में गांवों में उन्होंने अलख जगाई। झाँसी की रानी ने जब अंग्रेजों से युद्ध छेड़ा तो उसकी कहानी पूरे बुंदेलखंड में हरबोलों ने प्रचलित की।

खूबई लरी मरदानी,
अरे भाई झांसीवारी रानी।
सिगरे सिपइयन को पेरा
जलेबी, अपन खाई गुरधानी ।।
छोड़ मोरचा लसकर खों दौरी,
ढूंढै मिले ना पानी
खूबई लरी मरदानी,
अरे भाई झांसी वारी रानी।।

झांसी का युद्ध जीतने के बाद अंग्रेजों ने ढूंढ-ढूंढकर सारे हरबोलों को उस क्षेत्र से निष्कासित कर दिया। उनके टोल मोहल्ले नष्ट कर दिए।

इसका परिणाम ये हुआ कि ये लोक परंपरा लगभग टूट सी गई। दु:ख की बात ये है कि हरबोलों द्वारा रचित झांसी की रानी की गाथा या अन्य गीतों का पूरा पाठ कहीं उपलब्ध नहीं है। किसी ने भी इनका संकलन करने या खोज करने की कोशिश नहीं की। सुविख्यात कवियित्री सुभद्राकुमारी चौहान ने इसी हरबोले की पंक्ति को आधार बनाकर झांसी की रानी नामक प्रसिद्ध कविता की रचना की। अब हरबोले कहीं दिखाई नहीं पड़ते। हो सकता है देश की गौरव गाथाएं गाने वाले ये बदनसीब आज मनरेगा जैसी योजना में कहीं तालाबों में मिट्टी खोद या डाल रहे हों या कहीं देश के उन नीतिकारों के घरों - दफ्तरों में रोड़ी -बजरी कूट रहे हों जिनके द्वारा रोज़ी - रोटी के लिए बनाई नीतियां और संस्कृति मंत्रालय चलाये जा रहे हैं । लोक कलाओं और संस्कृति के नाम

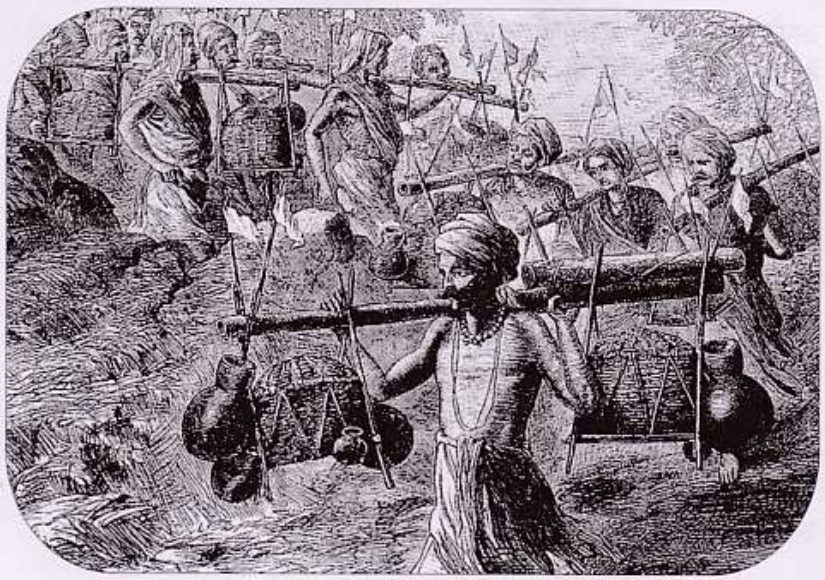

आज का संदेश

आज के हरबोलों के नाम

❑

घर जालौं घर ऊबरै,
घर राखौं घर जाइ।
एक अचंभा देखिया,
मड़ा काल कौं खाइ।।

बैद मुवा रोगी मुवा,
मुवा सकल संसार।
एक कबीरा ना मुवा,
जिनिके राम अधार।।

जीवन थैं मरिबो भलौ,
जौ मरि जानैं कोई।
मरनैं पहली जे मरें,
तौ कलि अवरावर होइ।।

आपा मेट्यां हरि मिलै,
हरि मेट्यां सब जइ।
अकथ कहांणीं प्रेम की,
कह्यां न को पताइ।।

❑

- कबीर

लोक परम्परा में हमारे संदेश वाहक

❑

एक जमाना वो भी था। जब न डाक जाती थी कहीं, न तार, न चिट्ठी। दूर तक संदेश भेजने का कोई साधन नहीं था। आदिम जातियों के साथ तो पहाड़ों-पठारों पर रखे हुए नगाड़े संदेश भेजने के माध्यम बने थे। रीति-कालीन समाज में नायिकाओं के लिए कबूतर, बाज या फाख्ताएं संदेश भेजने का माध्यम बनी थीं।

फिर धीरे-धीरे वो युग आया जब आदमी पैदल या ऊंट पर बैठकर संदेश इधर से उधर पहुंचाता था।

अलग-अलग बोलियों में इनके अलग-अलग नाम थे। कहीं बटाऊ था तो कहीं हरकारा, तो कहीं कुछ ओर।

ये हरकारे कहीं मौखिक संदेश पहुंचाते थे, तो कहीं लिखी हुई चिट्ठी ही।

कालीदास के मेघदूतम को याद करें तो वहां बादल ही संदेश वाहक बन गया था।

धीरे-धीरे वह जमाना आया जब गले में ढोलक, हाथ में डमरू अथवा तुरही आदि जैसे वाद्य यंत्र लेकर हरकारे इधर से उधर जाते थे और अपनी मीठी बोली में कुछ गाकर संदेश पहुंचाते थे।

इन हरकारों में अधिसंख्य ऐसे भी होते थे जो आशुकवि होते थे और कविता में अपनी बात कह देते थे। इन्हीं के समानान्तर हरबोलो का एक सम्प्रदाय बना और उन्होंने एक विशेष वेशभूषा में गा-गाकर संदेश पहुंचाना शुरू किये। सं. ❑

पर संस्थाएं और संगठन चलाने वालों के लिए देश की इन हज़ारों गुणी जातियों और उनके गुणों को बचाना न कभी मुख्य विषय नहीं रहा, न कभी कोई प्रयास नहीं किया। क्षेत्रीय विविधता के अनुरूप इन अनमोल विधाओं को बचाने के लिए विशेष विद्यालय या विश्विद्यालय तो दूर, इन विधाओं को बचाने लिए के कोई नीति तक नहीं बनाई, इससे बड़ी विडंबना और क्या हो सकती है। आधार, पैन कार्ड के दौर में भी देश की किसी राज्य सरकार के पास अपने-अपने प्रदेश की गुणी जातियों के न तो आंकड़े हैं न ही किसी तरह के प्रमाणित ब्योरे। इसे विडंबना नहीं कहेंगे तो क्या कहेंगे? अपने देश में भिन्न - भिन्न जातियां कभी भी किसी प्रकार का संकट नहीं रहीं, लेकिन जब से; जाति-विमर्श, दलित विमर्श, फलां-विमर्श, ढिकां-विर्मश वाले चतुर सुजान आये उन्होंने सदियों से सहजीवन पर टिके समाज को छिन्न-भिन्न अवश्य कर दिया।

समाज के बदलते स्वरूप में आज हरबोलों ने भी अन्य व्यवसाय अपना लिए हैं। फिर भी कभी हमारे कान में कभी मंजीरे पर राजा हरिश्चन्द्र या श्रवण कुमार की गाथा गाते कोई गायक मिल जाए तो समझिए वो हरबोला है। स्वाधीनता आंदोलन के हजारों अनाम शहीदों में हरबोलों का अपना विशिष्ट स्थान रहा है। स्वाधीनता आंदोलन में इन्होंने गुप्त रूप से सुप्त जनता को जागृत कर अपना बहुमूल्य योगदान दिया। ❑

१०२३, पहली मंजिल, सेक्टर-३८ बी,
चंडीगढ़- १६००३६

जब इंसानियत का दम घुट रहा था

जॉर्ज फ्लॉयड

❑

यहां दी गई पंक्तियां ४६ वर्षीय जॉर्ज फ्लॉयड के अंतिम शब्द हैं। फ्लॉयड अमेरिकी पुलिस अधिकारी के हाथों मारे गए। कोरोना काल में बेरोजगार हुए फ्लॉयड केवल काफी पीने गये थे। बिना पैसे के। अपनी ही बस्ती की थड़ी वाले ने पुलिस बुला ली। गोरी पुलिस ने उन्हें दबोच लिया। एक पुलिस अधिकारी ने उनकी गर्दन पर चॉकहोल्ड लगाया, जिससे चिल्लाते और रहम की भीख मांगते हुए उनके प्राण पखेरू उड़ गए। ❑ सं.

'यह मेरा चेहरा है श्रीमान
मैंने कुछ भी गलत नहीं किया
श्रीमान
मेहरबानी कीजिए
मेहरबानी कीजिए
मेहरबानी, मेरा दम घुट रहा है
मेहरबानी कीजिए महोदय
अरे कोई है
मेहरबानी कीजिए श्रीमान
मेरा दम घुट रहा है
मेरा दम घुट रहा है
मेहरबानी करें
(डूबती आवाज में)
श्रीमान, मैं सांस नहीं ले पा रहा हूं,
मेरा चेहरा
बस उठ जाने दें
मैं सांस नहीं ले पा रहा
दबा है, मेरी गर्दन पर घुटना
मेरा दम घुट रहा है
ओह
मैं सांस लूंगा
मैं हिल नहीं सकता
मां
मां
मैं कुछ नहीं कर सकता
मेरा घुटना
मेरी गर्दन
मैं मर रहा हूं
मैं मर रहा हूं
मैं बहुत कष्ट में हूं
मेरे पेट में दर्द है
मेरी गर्दन दुख रही है
बहुत दर्द हो रहा है
कोई पानी दो कुछ करो
मेहरबानी कीजिए
मेहरबानी
मेरा दम घुट रहा है हुजूर
मुझे मत मारिए
ये मुझे मार डालेंगे, यार
कोई बचाओ
मेरा दम घुट रहा है
मेरा दम घुट रहा है
ये मुझे मार रहे हैं
ये मुझे मार रहे हैं
मेरा दम घुट रहा है
मेरा दम घुट रहा है
मेहरबानी कीजिए श्रीमान
मेहरबानी
मेहरबानी
ओह मेरा दम घुट रहा है'

फिर उसकी आंखें बंद हो जाती हैं और आवाज भी बंद हो जाती हैं। जॉर्ज फ्लॉयड को कुछ समय बाद ही मृत घोषित कर दिया गया।

–सामयिक वार्ता से साभार

क्या है कोरोना ?

डॉ. श्री गोपाल काबरा

❑

हमें कोरोना वायरस से भयभीत और भ्रमित होने की जरूरत नहीं हैं। बचाव के साधनों को आत्मसात करना आवश्यक है। इसके लिए हमें सजग रहते हुए कोरोना के खिलाफ इम्युनिटी अर्जित करनी होगी। असल बचाव तभी संभव होगा।
भय को हमें त्याग कर इस वायरस के साथ ही जीना सीखना होगा। आवश्यक ऐतिहात बरतते हुए इसे अपनी जीवन शैली का भाग बनाकर सामान्य और सहज जीवन जीया जा सकता है। ❑ सं.

समय आ गया है जब हमें कोरोना वायरस संबंधी अति प्रचारित जानकारियों से उत्पन्न भय और भ्रांतियों से मुक्त होना होगा। इतना भयभीत होने की जरूरत नहीं है। आवश्यक ऐहतियात और सुरक्षा उपायों को अपनी दैनिक जीवन शैली का भाग बना कर अपना सामान्य और सहज जीवन जिया जा सकता है।

क्या वायरस एक जीव है? यह अपने आप से विभाजित हो कर प्रजनन नहीं कर सकता। फिर इसको जीव कैसे माना जा सकता है? फिर जो जीवित नहीं उसे मारा कैसे जा सकता है? वायरस आरएनए या डीएनए गुणसूत्र का मोलीक्यूल- अणु मात्र होता है। क्या आप चीनी, कार्बोहाइड्रेट के मोलीक्यू, चीनी के कण को मार सकते हैं? यही कारण है कि वायरस के खिलाफ वायरस नाशक सार्थक दवा नहीं होती। कोरोना नया वायरस-विषाणु है। इसके बारे में ज्ञान बड़ा कम और सतही है। अज्ञात का भय सबसे अधिक होता है। (फीयर ऑफ अननोन)। यह अपने आप विभाजित होकर प्रजनन नहीं कर सकता, अत: इसका जीवित कहना ही संदिग्ध है। वायरस जीव कोशिका के अंदर प्रवेश कर उसका अंतरंग भाग बनने के बाद ही उस कोशिका की सहायता से प्रजनन कर सकता है। वैज्ञानिकों के लिए इसका जीवन चक्र प्राणी शरीर के बाहर और अन्दर अध्ययन करना बड़ा कठिन और जटिल होता है। चिकित्सकों और वैज्ञानिकों को जो मिला, उसको उजागर कर दिया। सबका अपना-अपना सच। फलत: इतने 'सच' उजागर हुए कि समझ में नहीं आता कि हमारे लिए सच क्या है। भय और भ्रम का माहौल सर्वत्र व्याप्त है।

वैक्सीन ओर एन्टीबॉडी उपचार बड़ी भ्रम की स्थिति है। कोरोना के खिलाफ एन्टीबॉडी विकसित करने और उसे विशाल मात्रा में बनाने की होड़ मची हुई है। जानवरों, कोशिकाओं और कृत्रिम सिन्थेसिस कर एन्टीबॉडी बनाने की होड़। एक विषाणु विशेष के खिलाफ बनी एन्टीबॉडी ही उस विषाणु का सार्थक इलाज है। एन्टीबॉडी से उपचार होगा, कोरोना की रोकथाम नहीं कर सकता। यह वैक्सीन नहीं है। वैक्सीन में बैक्टीरिया या वायरस की एन्टीजन कृत्रिम रूप से शरीर में डाली जाती है। बिना रोगी हुए शरीर उस वायरस के खिलाफ एन्टीबॉडीज बनाने की क्षमता अर्जित कर लेता है, जो सदा बनी रहती है। इसे ही इम्यूनिटी कहते हैं। हर व्यक्ति जो सामान्य रूप से वायरस से संक्रमित होकर ठीक होता है, उसमें इसी तरह

इम्युनिटी पैदा होती है। सामान्यत: इनएक्टीवेटेड (निष्क्रिय) या अटेन्यूएटेड (अक्षम) रोगाणुओं का प्रयोग वैक्सीन के लिए किया जाता है। कोरोना वायरस आरएनए वायरस है। अत: इसके खिलाफ नई आरएनए तकनीक से वैक्सीन बनाने के प्रयास चल रहे हैं। शीघ्र सफल होने की आशा है।

दो तरह के टेस्ट चल रहे हैं। एक जिसमें नाक या गले से नमूना ले कर कोरोना वायरस का वहां होना देखा जाता है। यह निदान करता है कि शरीर में वायरस है या नहीं। वायरस का भौतिक रूप से सत्यापन होता है। दूसरा, जिसमें संक्रमित हुए व्यक्ति में एन्टीबॉडी का स्तर रक्त में देखा जाता है। जिस व्यक्ति में कोरोना संक्रमण के खिलाफ एन्टीबॉडी बनी है, वह संक्रिमत हुआ था यह तो निदान हो जाता है, लेकिन यह पता नहीं चलता कि वायरस अब भी उसमें सक्रिय है या नहीं। भ्रम यह है कि उच्च तकनीक से किए गये इन निदानों का परिणाम सदा सही होगा, यह गलत धारणा है। किसी भी जैविक विधि का परिणाम शत-प्रतिशत सही नहीं होता है। अधिक से अधिक ९८ प्रतिशत। दो प्रतिशत में तो परिणाम संदिगध या गलत होने की संभावना होती है, अर्थात् एक लाख में दो हजार। इसके अतिरिक्त हर टेस्ट की अपनी सेंसिटिविटी और स्पेफिसिटी होती है। जो डायग्नोस्टिक टेस्ट होते हैं उनमें २ प्रतिशत फॉल्स नैगेटिव होने की संभावना होती है। डायग्नोस्टिक टेस्ट में जो पॉजिटिव आया है वह निसंदेह सही है, लेकिन २ प्रतिशत संक्रमित होते हुए भी डिटेक्ट नहीं होते हैं और दूसरे में संक्रमित न होने पर भी पॉजिटिव आने की संभावना रहती है।

क्या कोरोना छूत की बीमारी है? छूत की बीमारी वह होती है जो केवल छूने से, शारीरिक स्पर्श से ही फैलती है। कोरोना हाइलीइन्फेक्सियस है कोंटिजियस नहीं। वैसे तो हर इन्फेक्सियस रोगाणु के हाथ से छूने पर आपके शरीर में आ सकता है। उसकी जन साधारण में संभावना कितनी है? कोरोना खांसने, छींकने या जोर से बोलने पर ड्रोप्लेट्स पानी/लार के कणों के साथ बाहर आता है। अगर पास में हवा गतिमान नहीं है तो यह वहीं बैठ जाता है। कुछ समय के लिए जीवित/ फन्फेक्सियस रहता है। मरीज की तीमारदारी करने वालों में छूने से इसके फैलाव की संभावनाएं अत्यधिक होती है। अत: उन्हें हर मरीज के पास से आने के बाद हाथ धोना या सैनिटाइज करना होता है।

संक्रमण की संभावना बनी रहेगी। यह वायरस हम में रहता है अत: हमें इसके साथ जीना सीखना होगा। बचाव के साधनों में जो भय के कारण अतिरेक आया है, उसे त्याग कर तर्कसंगत रूप में अपना कर अपना स्वतंत्र जीवन जीना होगा। बचाव के साधन आत्मविश्वास जगाते हैं, अतिरेक भय। हमें कोरोना के खिलाफ इम्युनिटी अर्जित करनी होगी, असल बचाव तो तभी होगा। हमें कोरोना की जोखिम भी उठानी होगी जैसे अन्य घातक रोगों के लिए उठा रहे हैं। आक्रांत होने से कोई बचाव नहीं होगा, आवश्यकता भी नहीं है। सार्थक जीवनयापन के लिए हमें भय मुक्त होना होगा। हम हो रहे हैं। कोरोना के विकराल स्तर पर फैलने की संभावना को हम काफी हद तक कम कर चुके हैं। भय मुक्त जीवन जीते हुए कोरोना से पार पाना है। हमें कोरोना के साथ जीना है। हम सजग हैं। हम सक्षम हैं। ❑

१५, विजय नगर, डी-ब्लॉक, मालवीय नगर, जयपुर

गरीबों के लिए कुदरती इलाज

महात्मा गांधी

❑

कुदरती उपचार में जीवन-परिवर्तन की बात आती है। यह कोई वैद्य की दी हुई पुड़िया लेने की बात नहीं है, और न अस्पताल जाकर मुफ्त या फीस देकर दवा लेने या उसमें रहने की ही बात है। जो मुफ्त दवा लेता है, वह भिक्षुक बनता है। जो कुदरती उपचार करता है, वह कभी भी भिक्षुक नही बनता। वह अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाता है और अच्छा होने का उपाय खुद ही कर लेता है। वह अपने शरीर में से जहर को निकालकर ऐसी कोशिश करता है कि जिससे दुबारा बीमार न पड़ सके। ❑

– हरिजनसेवक, २.६.४६

हूबनाथ की कविता

श्री हूबनाथ मुंबई विश्वविद्यालय में हिन्दी पढ़ाते हैं। मुंबई शहर में यहां-वहां कई साहित्यिक आयोजनों में सक्रिय रहते हैं। हिन्दी पढ़ाने के अलावा सदा सृजन में व्यस्त रहते हैं। एक मुखर सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं और एक प्रतिबद्ध प्राध्यापक भी। ❑ सं.

डर

ऑक्सीजन के साथ
हवा में घुल चुका है डर
सांस लेते हैं तो
भीतर चला आता है
सांस छोड़ते हैं तो
पसर जाता है बाहर
और लपेट लेता है
धुंध की सफ़ेद चादर-सा
नज़र नहीं आता
पर महसूस होता रहता
हर सांस के साथ
डर
अनिश्चय का अनिर्णय का
अज्ञान का अवसान का
श्मशान का अस्पताल का
कुटुंब का संसार का
सिद्धांत का व्यवहार का
ठीक ठीक तो नहीं पता
पर डर तो है

हर सांस के साथ
जितना भीतर
उतना बाहर
सारा जीवन इसकी चपेट में
पूरी क़ायनात गिरफ़्त में
सब कुछ धुंधला धुंधला
सब कुछ मैला मैला
मैल है कि जाती ही नहीं
त्वचा के भीतर बह रही
डर की मैल
उतरते बाढ़ के
मटमैले जल सरीखी
डर जीवन को मार देता है
पाले की तरह
लकवे की तरह
झुलसा देता है
लू की तरह
बहा ले जाता है
बाढ़ की तरह
डर बढ़ने नहीं देता पौधों को
नहीं खिलने देता कलियों को
नहीं हंसने देता बच्चों को
न होने देता सुबह
न ढलने देता शाम
बरसात तक को रोक देता है
हर्ष उल्लास
तीज त्यौहार
पर्व उत्सव
शोक आनंद
तुहिन कणों से जम जाते हैं
होते तो हैं
पर महसूस नहीं होते
जब रात
हिमालय सी जम रही हो
अंधेरा भविष्य बन जाए
बाहर कुछ नज़र न आए
तब कबीर ने कहा
भीतर देखो
हज़ारों सूरज दबे पड़े हैं
अज्ञान और मूढ़ता की
राख के ढेर के नीचे
उसे कुरेदो!उसे फूंको!
भीतर सब अकेले होते हैं
मसीहा हो या पैग़ंबर
नितांत अकेले
बाहर लोगों के होने का
बना रहता है भ्रम
पर भीतर सब अकेले होते हैं
साथ होती है
हमारी अनंत अजस्र शक्ति
जो दुर्भाग्य से दब गई है
राख के पहाड़ के नीचे
कहीं राख कम तो कहीं ज़्यादा
पर है हरेक के भीतर
जैसे है डर
भीतर भी और बाहर भी
और कबीर चुप हो जाता है ❑

-सी-६०१, कृष्णा गलैक्सी, दत्त मंदिर रोड,
वाकोला, सांताकुंज (ई.), मुम्बई-४०००६९ (महाराष्ट्र)

आज की जरूरत : ऑनलाइन शिक्षा

प्रेमपाल शर्मा

❑

आज कोरोना से देश में ऐसे हालात हो गये हैं जिसने जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है उनमें शिक्षा व्यवस्था पर सीधा असर सामने आया है। कक्षाओं में बालकों की संख्या को देखते हुए जरा सी भी असावधानी खतरा पैदा कर सकती है। ऐसे समय में 'ऑन लाइन' शिक्षा आज की खास जरूरत बन गयी है। वैसे तो भारत में चौथी क्रांति यानि डीजिटल युग का प्रवेश पहले ही हो चुका था लेकिन इस महामारी से आज इसकी प्रासंगिकता और भी बढ़ गयी है। प्रस्तुत आलेख में शिक्षाविद् प्रेमपाल शर्मा बता रहे हैं कि हमें ऐसे झटकों का सामना चुनौति मानकर ही करना चाहिए। ❑ सं.

कोरोना वायरस ने मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। दूसरे क्षेत्रों पर इसके व्यापक प्रभाव धीरे-धीरे सामने आएंगे, लेकिन शिक्षा व्यवस्था में तो अभी से असर दिखने लगा है। हालांकि इसके नुकसान को कम से कम करने के लिए केन्द्र सरकार ने 'भारत पढ़े ऑनलाइन योजना' पर काम शुरू कर दिया है। इसे और बेहतर बनाने के लिए उसने जनता से सुझाव भी मांगे हैं। इसके तहत स्कूली शिक्षा से लेकर कॉलेज स्तर के इंजीनियरिंग और व्यावसायिक सहित सभी पाठ्यक्रम यथासंभव ऑनलाइन शुरू हो रहे हैं। यहां तक कि सिविल सेवा परीक्षा और आइआइटी मेडिकल कॉलेजों के लिए तैयारी कराने वाले कोचिंग संस्थान भी इसमें जुट गए हैं। इसके पर्याप्त कारण भी हैं, क्योंकि अभी कोई नहीं कह सकता कि स्थितियां कब सामान्य होंगी? सामान्य होंगी भी तो शारीरिक दूरी अभी कितने दिनों तक बरतने की जरूरत है? कई बार तो एक ही क्लास में सैकड़ों बच्चे होते हैं। ऐसे में यदि सावधानी नहीं बरती गई तो उसके बहुत बुरे परिणाम हो सकते हैं। अभी तक तो राजस्थान के कोटा, दिल्ली के मुखर्जी नगर जैसे शहरों में एक ही कमरे में कई-कई बच्चे मिलकर रहते आए थे। अब सभी ऐसी स्थितियों से डरने लगे हैं।

भारत चौथी क्रांति यानी डिजिटल युग में काफी पहले से प्रवेश कर चुका है। केन्द्र सरकार की जनधन से लेकर आधार जैसी न जाने कितनी योजनाएं पिछले कुछ वर्षों में लागू हुई हैं। देखा जाए तो इस महामारी ने उनकी भी प्रासंगिकता बढ़ा दी है।

बीसवीं सदी के अवसान के समय प्रसिद्ध अमेरिकी पत्रिका टाइम ने कुछ विशेषांक निकाले थे। ऐसे ही एक अंक में उसने भविष्य में जो नौकरियां खत्म होंगी या कम होंगी उसमें शिक्षकों और शिक्षा संस्थानों को भी शामिल किया था। तब इंटरनेट को आए सिर्फ पांच-सात साल ही हुए थे। दुनियां ग्लोबल गांव और विशेषकर सूचनाओं, ज्ञान की साझी धरोहर के रूप में बढ़ रही थी। पिछले २० वर्ष में तो यह अप्रत्याशित रूप से समृद्ध हुई है। भारत जैसे गरीब विकासशील देशों को भी इसका फायदा मिला है। आज ऑक्सफोर्ड, कैंब्रिज सहित दुनिया भर के अच्छे विश्वविद्यालयों के स्तरीय व्याख्यान, पाठ्य सामाग्रियां, जर्नल, पत्रिकाओं में छपे लेख इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। उन तक पहुंचने में कहीं कोई रुकावट नहीं है। भारत में भी आइआइटी और दूसरे अच्छे संस्थानों

के लेक्चर, पाठ्य सामग्रियां इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। ऐसी स्थिति में ऑनलाइन शिक्षा को प्रोत्साहन देने से विद्यार्थी नए से नए ज्ञान से भी लैस होते रहेंगे। साथ ही हमारे शिक्षकों पर सक्षम, अद्यतन न होने और शिक्षकों की कमी के जो आरोप लगते रहे हैं उसे भी ऐसी शुरुआत दूर कर सकती है। इसके लिए परंपरागत स्कूली ढांचे और शिक्षा मॉडल में भी बदलाव की उतनी ही तेजी से जरूरत है। हालांकि केन्द्र सरकार ने शुरुआत के तौर पर इस वर्ष बजट में लगभग १०० कॉलेजों में ऑनलाइन शिक्षा के बारे में प्रावधान किए हैं। भविष्य में इसकी संख्या और बढ़ानी होगी। जाहिर है यह कहावत 'नो नॉलेज विदाउट कॉलेज' अब अर्थ खोने के कगार पर हैं।

कोरोना से इतर भी देखा जाए तब भी भारत जैसे गरीब देश में ऑनलाइन शिक्षा की जरूरत आ गई है, क्योंकि बढ़ती जनसंख्या और जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप हमारे पास पर्याप्त स्कूल-कॉलेज उपलब्ध नहीं हैं। नर्सरी और प्राइमरी कक्षाओं में दाखिले के लिए भी पूरे देश में अफरा-तफरी मची रहती है। ऑनलाइन के विकल्प से स्कूलों पर दबाव भी कम होगा और अभिभावकों को एवं बच्चों के लिए अपने-अपने ढंग से पढ़ने-पढ़ाने की स्वतंत्रता भी। यानी स्कूल में दाखिले की अनिवार्यता खत्म हो जाएगी।

पश्चिमी देशों में ऐसे प्रयोग दशकों से चल रहे है जिन्हें होम स्कूल या घर स्कूल के नाम से जाना जाता है। इनके पाठ्यक्रम काफी लचीले हाते हैं। अभिभावक चाहें तो उनमें अपने ढंग से कोई बदलाव कर सकते हैं। दरअसल महत्वपूर्ण पक्ष होता है अच्छी ज्ञान सामग्री, पाठ्यक्रम आदि की सहज उपलब्धता और यदि ये घर बैठे ही मिल जाए और अभिभावक बच्चों को अपने ढंग से पढ़ाना चाहें तो किसी को क्या आपत्ति होनी चाहिए? इसके मद्देनजर कुछ वैकल्पिक शिक्षा बोर्ड बनाने की भी जरूरत पड़ेगी। जिससे बच्चों को अगली कक्षाओं में पढ़ाई करने में कोई परेशानी न हो। शुरुआत के लिए पांचवी, आठवीं, दसवीं, १२वीं के बोर्ड जैसी एकल अखिल भारतीय परीक्षाएं आयोजित की जा सकती हें। ऐसी लचीली व्यवस्था में बच्चों को पढ़ने की स्वतंत्रता के साथ-साथ रचनात्मक मौलिकता भी बेहतर बनेगी। दुनिया भर में ऐसी शिक्षा के अच्छे परिणाम सामने आए हैं। पर्यावरण की दृष्टि से भी इसके अच्छे नतीजे सामने आएंगे, क्योंकि ऑनलाइन पर निर्भरता से कॉपी, किताब की जरूरतें कम होंगी। लोग सड़कों पर आने-जाने की भीड़ से बचेंगे। देश की मातृ-भाषाओं में सभी विषयों की सामग्री इंटरनेट पर उपलब्ध कराना जरूर एक चुनौती होगी, लेकिन यह असंभव नहीं है। यह देश और पूरे समाज के हित में रहेगा। नई शिक्षा नीति में इसे शामिल किया जाना चाहिए। ❑

९६, कला विहार अपार्टमेंट्स,
मयूर विहार, फेज-१, एक्सटेंशन, दिल्ली
response@jagran.com; मो. ९९७१३९९०४६

सवाल जो जवाब चाहते हैं?

❑

आकाश-मार्ग से दी जा रही है ऑनलाइन-शिक्षा कितनी प्रभावी है? कितनी प्रासंगिक है? गरीब बच्चों और विपन्न माता-पिताओं को सीधे-मुंह सताती और अपमानित करती यह शिक्षा कितनी मानवीय है?
ऐसी शिक्षा कितनी बाल-वत्सल है और कितनी बाजार वत्सल? पाठक कृपया सोचें, विचार करें।
❑ *सं.*

ले ख

तालाबंदी में बच्चों की शिक्षा

सुमन पारीक

❑

वर्तमान में कोरोना के चलते बच्चों की शिक्षा पर चिंता जताते हुए संधान से सुमन पारीक कह रही हैं कि अभी हम सभी अभिभावकों, शिक्षकों के सामने बच्चों को स्कूल भेजना बड़ी चुनौती है। हालांकि अभी ऑनलाइन पढ़ाई की व्यवस्था की गई है। ऐसे में बहुत से सवाल हमारे सामने हैं। क्या यह सुविधा सभी घरों में, परिवारों में उपलब्ध है? उनका मानना है कि बच्चों की जान जोखिम में बिना डाले कई मॉडल तैयार करने होंगे। आज ज्यादा जरूरत बच्चों के जीवन को सुरक्षित रखने की है। ❑ सं.

कोविड-१९ (कोरोना) महामारी ने सभी की जिंदगी में उथलपुथल मचा दी है। मन में जबरदस्त डर भी पैदा किया है। महामारी ज्यादा न फैले, ज्यादा जान-माल का नुकसान ना हो, घर-घर तक ना पहुंचे इसलिए देश में लोक डाउन भी लगाया गया। लोक डाउन से एक अंतराल के लिए कोरोना की स्पीड तो कम कर पाए लेकिन कोरोना ने अपना जाल नहीं समेटा।

तालाबंदी के दौरान परिवार, गाँव, शहर और पूरा देश ही कमजोर आर्थिक स्थिति की गिरफ्त में आ गया। बहुत से कामगारों का काम छूट गया। उन्होने गाँव में अपनों के बीच जाने का जतन किया। ट्रांसपोर्ट के अभाव में मीलों दूरियाँ पैरों से नापी। भूखे-प्यासे, मरते-खपते जैसे-तैसे अपने गाँव पहुँचे तो उन्हें वहाँ क्वारंटाइन होना पड़ा। इनमें से कुछ बहुत बदनसीब निकले जो सशरीर गाँव नहीं पहुँच सके। इन सबके साथ वे बच्चे भी थे जो अपने स्कूल से दूर जा रहे थे।

उपरोक्त स्थितियों में बच्चे कहाँ अछूते रहने वाले थे। नन्हें-मुन्ने और बड़े बच्चे घरों में कैद होकर रह गए। प्री प्राइमरी, प्राइमरी, उच्च प्राइमरी, स्कूल और कॉलेज सब बंद हो गए। धीरे-धीरे अन्य सभी चीजें खुल रही है लेकिन सावधानी और डर के साथ। क्या बच्चों के स्कूल भी खोल दिये जाए? इसके लिए हर व्यक्ति, संस्था और सरकार मंथन कर रही हैं। यदि माँ होने के नाते मुझसे पूछा जाए तो मैं अपनी बेटी को तब तक स्कूल नहीं भेजूँगी, जब तक कोरोना यहाँ से विदा ना हो जाए।

अभिभावकों, अध्यापकों और शिक्षाधिकारियों ने बच्चों की पढ़ाई को जरूरी मानते हुए अपने स्तर पर ऑनलाइन पढ़ाई की व्यवस्था भी शुरू करा दी है। सरकारी हो या प्राइवेट सभी स्कूल यूट्यूब या स्वनिर्मित वीडियो और लेसन के माध्यम से बच्चों को होमवर्क दे रहे हैं। यहाँ एक सवाल उठता है कि क्या सभी बच्चे ये होमवर्क कर रहे हैं? क्या सभी वर्ग के बच्चों को इसका लाभ मिल पा रहा है? शायद ऐसा नहीं हो पा रहा हो। अन्य स्थितियों पर भी विचार करना होगा कि क्या प्रत्येक बच्चे के घर में मोबाइल है? यदि मोबाइल हैं तो क्या वे स्मार्ट फोन हैं? क्या स्मार्ट फोन में पर्याप्त नेट फेसिलिटी है? क्या पर्याप्त कनेक्टिविटी है? क्या बच्चे या उनके अभिभावक ऑनलाइन को एक्सेस कर पाते हैं?

इन्हीं सवालों के जवाब ढूँढने के लिए बड़े स्तर पर वेबिनार आयोजित किए जा रहे हैं। वेबिनार में सभी का एक ही सवाल होता है शिक्षा कैसे हो? कुछ समाधान भी बताए जा रहे हैं। संधान में भी लगातार डिस्कशन चल रहा है। ये तो सभी मान रहे है कि पढ़ाई का स्वरूप बदलना पड़ेगा। सोशल डिसटेंसिंग को ध्यान में रखकर योजना बनानी होगी।

मेरे विचार से इन हालातों में हमारे देश में कोई एक मॉडल काम नहीं करेगा। इसके लिए लार्ज स्केल पर प्लान नहीं बनाकर परिस्थियों और संदर्भ को ध्यान में रखकर योजना बनाने की जरूरत होगी। एक मॉडल यह हो सकता है कि उन विद्यालयों को चिन्हित किया जाए जहाँ बच्चे एक ही जगह से आ रहे हैं। वे अपने क्षेत्र या गाँव में अभी भी एक-दूसरे के साथ खेल-कूद रहे हैं। आस-पास ही रहते हैं। उनके लिए स्कूल खोला जाना आसान होगा। कक्षा कक्ष में ना बैठाकर बाहर ही छायादार जगह पर उचित दूरी पर बैठाया जा सकता है। क्लास में ज्यादा बच्चे उसी क्षेत्र के हैं तो उनके लिए स्कूल आने के सप्ताह में दिन सुनिश्चित किए जा सकते हैं।

दूसरा मॉडल उन बच्चों के लिए हो जो स्कूल में दूरी से आते हैं। उनके लिए उनके घर के आस-पास ही पढ़ाई की व्यवस्था करवाए जाने का प्लान बनाया जा सकता है। इसके लिए स्कूल के अध्यापक और वालियंटर्स का चयन किया जा सकता है। वालियंटर्स को अध्यापक प्रशिक्षण दे सकते हैं। बच्चों के सीखने को सुनिश्चित करने के लिए दोनों मिलकर योजना बनाएँ। प्रत्येक अध्यापक और वालियंटर्स को दस-दस बच्चों की ज़िम्मेदारी दी जा सकती है। स्कूली बच्चों के एक किलोमीटर के दायरे में यह व्यवस्था लागू की जा सकती है। वालियंटर्स से अध्यापकों का सीधा संवाद रहे।

तीसरा मॉडल में उन बच्चो को चिन्हित किया जाए जिनके पास स्मार्ट फोन और इन्टरनेट की सुविधा है। अध्यापकों द्वारा बहुत छोटे लेसन या वीडियो तैयार किए जा सकते हैं। क्योंकि बच्चे लंबे समय तक अपनी पढ़ाई पर कोंसंट्रेट नहीं कर पाते हैं। लगातार उनका फॉलोअप सुनिश्चित किया जाए। टेक्स्ट मैसेज, वीडियो कॉल या कॉल के जरिये फॉलोअप किया जा सकता है। अध्यापक लगातार अभिभावक और प्रत्येक बच्चे के संपर्क में रहें।

बच्चों की पढ़ाई हो, ये जरूरी है लेकिन बच्चों की जान जोखिम में डालकर अभी स्कूल में बुलाकर पढ़ाई करवाना समझदारी नहीं होगी। दूरी से आने वाले बच्चे इकट्ठे एक वाहन में आते हैं। हम सभी जानते है वो किस तरह से उस में भरकर आते हैं। उस दौरान संक्रमण का खतरा टाला नहीं जा सकता। अभी पढ़ाई से ज्यादा बच्चों के जीवन के बारे में अधिक सोचने की आवश्यकता है।

❑ फेकल्टी, संधान, जयपुर
मो. ९९५०११५०५०

मैं केवल व्यक्ति हूं। मेरे माथे पर किसी प्रकार का लेबल लगा हुआ नहीं है। मैं किसी संस्था का सदस्य नहीं हूं। राजनैतिक पक्षों का मुझे स्पर्श नहीं है। रचनात्मक संस्थाओं के साथ मेरा प्रेमसंबंध है। मेरी बातें लोगों को अच्छी लगती हैं, क्योंकि मेरे कार्य की जड़ में करुणा है, प्रेम है और विचार है। मैं इतना बेभरोसे का आदमी हूं कि आज एक मत व्यक्त करूंगा और कल मुझे दूसरा मत उचित लगा तो उसे व्यक्त करने में मैं हिचकिचाऊंगा नहीं। कल का मैं दूसरा था, आज का दूसरा हूं। मैं प्रतिक्षण भिन्न चिंतन करता हूं। मैं सतत बदलता ही आया हूं। ❑

– विनोबा भावे

अय्यंकली को याद करेंगे! जाति प्रथा का नाश करेंगे!

अय्यंकली जी

❑

महान क्रांतिकारी जाति विरोधी योद्धा अय्यंकली का जन्म केरल के त्रावनकोर रियासत में २८ अगस्त, १८६३ में हुआ। वे दलित जाति में जन्में थे। उस समय केरल में दलितों की स्थिति बहुत खराब थी जिसके कारण उन्हें अस्पृश्यता का घनघोर रूप से सामना करना पड़ता था। प्रस्तुत आलेख में पाठक पढ़ सकेंगे कि किस प्रकार उन्होंने जातिवादी ताकतों को चुनौति देने के लिए साहसपूर्ण कदम उठाएं। पाठकों के लिए उनका यह संघर्ष एक मिसाल है। ❑ सं.

साथियों, शायद आप में से कई लोगों ने महान क्रान्तिकारी जाति विरोधी योद्धा अय्यंकली का नाम नहीं सुना होगा। इसकी वजह यह है कि, क्रान्तिकारी तरीके से परिवर्तन के हिमायती और इस व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करने वालों योद्धाओं की विरासत को यह व्यवस्था हमेशा जनता से छिपा कर रखना चाहती है, १८९३ में अय्यंकली ने उच्च जातियों के पोशाक पहन कर (जो कि दलितों के लिए पहनना वर्जित था) गड़ांसा लेकर बैलगाड़ी में बैठ कर एक सड़क पर घूमने निकल गये। ऐसी ही एक और घटना है जिसमें वे जातिवादी ताकतों को चुनौती देने के लिए नेदुमंगडा के एक बाजार में प्रवेश कर गये। इस तरह साहसपूर्ण चुनौती देने की वजह से त्रावनकोर की उत्पीड़ित जनता के मन में विश्वास और आशा पैदा किया और फिर लोगों ने ऐसे कई और प्रयास किये।

सन् १९०० में अय्यंकली के नेतृत्व में दलितों का ऐसा ही एक विरोध प्रदर्शन जिसने जातिवादी ताकतों के हमले की वजह से हिंसक रूप ले लिया जिसे चेलियार दंगे के नाम से जाना जाता है, की वजह से दलितों ने त्रावनकोर राज्य के सार्वजनिक सड़कों पर चलने के अधिकार को हासिल किया। दलितों के लिए शिक्षा के अधिकार के लिए भी उन्होंने बेहतरीन संघर्ष की मिसाल पेश की। उन्होंने एक संगठन 'साधू जाना परिपालना संघम' का स्थापना की, जो जनता के आर्थिक सहयोग से दलितों के लिए स्कूलों की उपलब्धता के लिए मुहिम चालाती थी।

एक बार एक पुलियार लड़की के सरकारी स्कूल में दाखिला दिलाने के प्रयास में जातिवादी ताकतों के हिंसक हमले का सामना करना पड़ा और उन लोगों ने स्कूल में आग लगा दी। इसके जवाब में अय्यंकली ने खेतिहर मजदूरों की हड़ताल करवायी जो कि उस क्षेत्र की पहली हड़ताल थी। सवर्ण खेत मालिकों के खेत पर काम करने वाले दलित मजदूरों ने काम करना बंद कर दिया और इस दबाव के वजह से सरकार को हस्तक्षेप करना पड़ा और नतीजतन दलित छात्रों के सरकारी स्कूलों में प्रवेश पर बंदिश को पूर्ण रूप से खत्म कर दिया गया। उन्होंने खेतिहर मजदूरों की पहली यूनियन का भी गठन किया और मजदूरी बढ़वाने के लिए भी संघर्ष किया।

आज के समय में जब घनघोर प्रतिक्रियावादी ब्राह्मणवादी फासीवादी ताकतें सत्ता में मौजूद हैं और पिछले ५ वर्षों में दलितों, मजदूरों और समाज के दूसरे अरक्षित तबकों पर हमले अप्रत्याशित रूप से तेजी से बढ़े हैं, ऐसे में अय्यंकली को याद करना नये संघर्ष की शुरुआत करने के लिए बेहद प्रेरणादायक है।

एक और बात जो यहां पर समझना बेहद जरूरी है कि जाति व्यवस्था के उन्मूलन के लिए संघर्ष और हर प्रकार के जातिगत उत्पीड़न के विरुद्ध लड़ाई किसी अस्मितावादी राजनीति के रास्ते संभव नहीं है। ना ही व्यवस्था के साथ गठजोड़ कर या प्रार्थनापत्र लिखने या बस कानूनी लड़ाई से ही यह मुकाम हासिल किया जा सकता है। हमें यह बात समझनी होगी कि सत्ता में बैठे शासक सही मायने में जनता के प्रतिनिधि नहीं होते हैं बल्कि मुट्ठी भर शोषकों के हितों का प्रतिनिधित्व करते है। जाति व्यवस्था जैसे शोषणकारी सामाजिक व्यवस्था और विचारों का इस्तेमाल जनता को बांटने और जनता के सबसे उत्पीड़ित हिस्से को लूटने और दबाने के लिए शासक वर्ग के हाथ में एक बेहतरीन हथियार है और जिसका इस्तेमाल इतिहास के हरेक शासक वर्ग ने किया है और आज पूंजीवादी फासीवादी ताकतें भी इसका इस्तेमाल उतनी ही चालाकी से कर रही है। ऐसे में हम शासक वर्ग से विनती कर यह उम्मीद नहीं रख सकते कि वे जातिगत उत्पीड़न के खिलाफ कोई कारगर कार्यवाही करें। कम से कम इतिहास की शिक्षा और अय्यंकली का संघर्ष हमें यही सिखाता है। इतिहास में हमने जो भी सफलता हासिल की वह जनता के जुझारू संघर्ष के दम पर ही हासिल की है। और ना ही किसी अस्मितावादी पूंजीवादी राजनीति से हम जाति व्यवस्था के विरुद्ध कोई निर्णायक संघर्ष कर सकते हैं। अस्मितावादी राजनीति हमेशा जनता के बीच एक दीवार पैदा करती है जो कि न सिर्फ उनकी क्रान्तिकारी एकता के लिए बाधक है बल्कि उनके सामने एक कल्पित शत्रु भी पैदा करती है और अन्त में ये फासीवादी ताकतों के पनपने के लिए जमीन मुहैय्या करती है। आज जो बर्बर फासीवादी ताकतें सत्ता और समाज के पोर-पोर में समा गयी हैं इसके लिए कहीं न कहीं अस्मितावादी राजनीति भी जिम्मेदार है। आज की जरूरत है कि जाति उन्मूलन के लिए एक वर्ग आधारित जाति विरोधी आंदोलन को खड़ा किया जाय और मजदूर मेहनतकश वर्गों की एकता के बल पर शोषण और उत्पीड़न पर आधारित इस पूंजीवादी व्यवस्था के खिलाफ समाजवाद के लिए एक निर्णायक संघर्ष की नयी शुरुआत की जाय। और यही करना सही मायने में महान क्रान्तिकारी जाति विरोधी योद्धा अय्यंकली के लिए एक सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ❑

अमित

मुक्तिकामी छात्रों-युवाओं का आह्वान से साभार

कश्मीरी लाल जाकिर

एक थे जाकिर साहब

पूरा नाम था कश्मीरी लाल जाकिर। न तो कश्मीर के रहने वाले थे और न ही जन्म से मुसलमान। जाकिर उनका कवि नाम था। और इसी नाम से वो प्रसिद्ध हो गये थे। रहने वाले हरियाणा के थे। प्रखर शायर थे। तेजस्वी विचारक थे। राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के प्रारंभिक दिनों में वे अचानक राष्ट्रीय पटल पर छा गये थे। एक शायर के रूप में वे राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम से जुड़े और इस कार्यक्रम की मूल भावना के अनुरूप बोलती हुई भाषा में उन्होंने एक छोटी सी किताब लिखी। नाम था- अलफ़ाज़ बोलते भी हैं इस किताब को तब राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय ने प्रकाशित किया था। अगले पन्नों पर इसी पुस्तक से चुने हुए कुछ अलफ़ाज़। ❑ सं.

हम दर्द अपना कह सकें
हमको जबान दो,

धरती के ज़र्रे ज़र्रे को इक
आसमान दो।

नज़रों के सामने से अब पर्दे
हटाओ तुम,

कोई न जिसकी सीमा हो ऐसी
उड़ान दो।

इस देश को बनाने में अपना
भी हाथ है।

इतने महान काम में हम
सबका साथ है।

– कश्मीरी लाल जाकिर

क्या हो रहा है समिति में?

अक्सर लोग पूछते हैं कि समिति में क्या हो रहा है? पूछना वाजिब है क्योंकि कोरोना काल में हो भी क्या सकता है? न मिलना, मिलाना। न आना, न जाना। न साथ बैठना, न कोई विचार, न कोई विमर्श। कोराना काल आने से पहले ही जिस संस्था को मिलने वाली सरकारी सहायता बिना किसी इत्तला के बंद कर दी जाये वहां तो कुछ भी होना मुश्किल ही होगा।

फिर भी अपने पूरे दमखम के साथ कोई स्वैच्छिक संस्था किसी सार्थक काम से जुड़ी रह सके तो यह एक अचंभे की बात ही होगी। अचंभा भले हो, मगर कुछ हो रहा है।

१. बने बनाये मास्कों का नि:शुल्क वितरण –

किसी सुधी-समाजसेवी के सौजन्य से हमको १००० सिले-सिलाये मास्क मिल गये हैं। उनका हम इन दिनों जरूरत मंद लोगों को मुफ्त में वितरण कर रहे हैं। गांव में भी और शहर के चौराहों या मंदिर-मस्जिद के बाहर भी। यह हमारा इन दिनों चल रहा एक छोटा सा राहत कार्य है। **राहत कार्य में शरीक होने का समिति का इतिहास पुराना है।** पहले बाढ़ के दिनों में और फिर आकंठ अकाल में डूबे बाड़मेर जिले के रेतीले टीबों के बीच बसे गांव-ढ़ाणियों में। अब हम कोरोना काल में भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार शिरकत कर रहे हैं। पूरी विनम्रता के साथ। अनुनय विनय है कि जो भी सहयोग देना चाहे वो अवश्य दें।

चिड़ी चोंच भर ले गयी,
नदी न घटियो नीर।

२. गांवों में सिलाई जानने वाली जरूरत मंद औरतों को मास्क और कुछ कपड़े सिलने का रोजगार

किसी वस्त्र निर्यात कम्पनी ने हमको अपने यहां बची हुई कपड़े की कतरनों के बोरे भेज दिये हैं। इन कतरनों को हम आकार-प्रकार और रंगों के अनुसार छांट रहे हैं। ये कपड़े भंभोरिया, देवलिया, बगरू खुर्द, झांई और आस-पास के गांव में बांटे जा रहे हैं। वे जरूरत मंद औरतें जिनके पास अपनी सिलाई मशीने हैं और जो ऊषा सिलाई मशीन की कम्पनी से प्रशिक्षण प्राप्त कर चुकी हैं, हमारे लिए मास्क और बच्चों के कपड़े सिलने का काम करेंगी। इनको सिलाई की मजदूरी देने के लिए हम घर-घर से कुछ पैसा जुटा रहे हैं। लगभग इसी तर्ज पर दे दाता के नाम

तुझ को अल्ला रखे। जो भी पहल करेगा उसका भला होगा। हमारा संकल्प सिर्फ यही है कि हमारा कोई भी राहत कार्य समिति पर भार न बने।

३. कोरोना काल में घर–घर में पोथी घर और किताबें की थड़ी

किताबों की थड़ी समिति कार्यालय में कई महीनों से लगा रहे हैं। इन दिनों घर–घर को पोथी–घर बनाने का सारा फोकस है।

४. राजस्थान की आजाद और बोलती संत महिलाओं के जीवन एवं सृजन का अध्ययन, संकलन प्रकाशन

यह एक गंभीर और श्रमसाध्य योजना है। विचार यह है कि राजस्थान की उन तमाम संत महिलाओं के जीवन और सृजन का अध्ययन किया जाये जिन्होंने रूढ़ियों को तोड़ा है और अपने लिए एक नया आकाश रच कर पूरे समाज को नया रास्ता दिखाया। मीरां तो इनमें सर्वोपरी है ही, मगर साथ ही सहजो बाई, समान बाई, दया बाई, भूरी बाई, सखी सहचरी, गवरी बाई आदि कई ज्ञात अज्ञात महिला संतों के जीवन का भी अध्ययन किया जायेगा। उनकी वाणियों का संकलन किया जायेगा और फिर प्रकाशन। यह काम भी हम श्रीमती धर्मेन्द्र कंवर के सहयोग से कर रहे हैं। वे इस काम के लिए अपने सम्पर्कों से हमारे लिए अनुदान की व्यवस्था करेंगी। इंटेक की भी मदद हो सकती है अथवा उनके किसी ओर सम्पर्कों से यह संभव होगा।

५. श्रीमती अरुणा रॉय के साथियों द्वारा चलायी जा रही संस्था स्कूल ऑफ डेमोक्रेसी के साथ एक दूरगामी सहयोग की शुरूआत

श्रीमती अरुणा राय का प्रस्ताव था कि हम लोकतंत्र शाला के साथ परस्पर सहकार से सतत शिक्षा का एक कार्यक्रम चलायें। यह कार्यक्रम लोकतांत्रिक मूल्यों एवं संकल्पनाओं के अध्ययन एवं परस्पर समझ की दिशा में एक सुचिंतित कार्यक्रम होगा। जब तक कोरोना काल है तब तक गूगल मीट पर सार्थक संवाद आयोजित करते रहें और कोरोना काल के बाद अच्छे मनीषी विद्वानों का समिति में आना जाना हो और उनके व्याख्यान आयोजित किये जावें। हमने यह प्रस्ताव गूगल मीट पर आयोजित कार्यकारिणी की बैठक में भी रखा था। कार्यकारिणी ने इसकी सहर्ष स्वीकृति दी थी। इस बैठक के बाद समिति के अध्यक्ष श्री रमेश थानवी, सचिव श्री अरविन्द ओझा और संयोजन सचिव श्री दिनेश पुरोहित के साथ अरुणा एवं साथियों की चर्चा गूगल मीट पर फिर हो चुकी है। यह कार्यक्रम प्रगति पर है।

६. ग्राम सखी संवाद

पिछले दिनों हमारे यहां प्रशिक्षित हुई शिक्षा प्रचेताओं की मदद से जयपुर के आस–पास कुछ गांवों में हमने ग्राम सखी संवाद का आयोजन प्रारंभ किया है। मकसद यही है कि ग्राम सखियां गांवों की

हम इस कदर करीब हैं, यह भी तो देख लो,

हम दोस्त हैं, हबीब हैं, यह भी तो देख लो।

इस कशमकश के दौर में हम काम आएंगे,

हम कितने खुशनसीब हैं, यह भी तो देख लो।।

हम जिनके साथ होते हैं वो कामरान हैं,

तुम तो फकत जमीन हो, हम आसमान हैं।

– कश्मीरी लाल जाकिर

१५ से ३५ वर्ष तक की उम्र की महिलाओं के साथ चर्चाएं आयोजित करें और उनकी समस्याओं को समझ कर उनके सार्थक सहयोग की व्यवस्था करें। इस संवाद के साथ घर घर में पोथी घर खोलने और पारिवारिक सेहत को सुरक्षित रखने के सुचिंतित प्रयास किये जा रहे हैं। कोरोना काल में यह आवश्य भी है।

७. ग्राम सखी संवाद के समानान्तर गांवों में चल रही छोटी-छोटी स्कूलों में बाल-सखा संवाद का आयोजन

अनुभवी अध्यापकों को साथ लेकर हमने प्राइवेट ग्रामीण स्कूलों के छात्रों के साथ बाल-सखा संवाद का आयोजन आरंभ किया है। पिछले दिनों ऐसा एक आयोजन 'बोधायन संस्थान' के सहयोग से गणित के अध्ययन को आनन्ददायी बनाने के लिए आयोजित किया गया। यह संवाद वाटिका गांव के एक स्कूल सिल्वर स्टेपस् के बालकों के साथ किया गया। ऐसे ही संवाद अन्य विषयों को रोचक तरीके से समझने के लिए आयोजित किये जायेंगे। ऐसी हमारी मंशा है।

८. गांधी विचार के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष प्रकाशन

समिति द्वारा पिछले दिनों गांधी विचार के प्रचार-प्रसार के लिए कुछ प्रकाशन किये गये हैं। एक छोटे से जेबी लिफाफे में १४ बहुरंगी कार्ड्स पर सरल एवं काव्यात्मक संदेश प्रकाशित कर सिर्फ ५०/- रुपये में वितरित करने का प्रयास कर रहे हैं। यह लिफाफे किताबों की थड़ी में भी रखे जाते हैं और व्यक्तिगत रूप से बांटने का भी प्रयास किया जा रहा है।

९. एक खूबसूरत डिब्बे में सबके गांधी शीर्षक के अन्तर्गत स्व. श्री नारायण भाई देसाई द्वारा लिखी १२ पुस्तिकाओं का प्रकाशन

नारायण भाई की इन पुस्तिकाओं में बापू के जीवन दर्शन और उनकी गाथाओं से संबंधित कुछ पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। इस डिब्बे के प्रस्तावित स्वरूप को ३० जनवरी, २०२० को समिति में आयोजित प्रार्थना सभा में श्री नन्दकिशोर आचार्य ने विमोचित किया था। अब उसकी अधिक प्रतियां छप गयी हैं और वितरण के लिए उपलब्ध है। ❑

महात्मा गांधी

❑

बापू जी को याद करेंगे
हिंसा से हम सदा बचेंगे

❑

बापू जी का मार्ग हमारा
घर-घर फैले भाईचारा

❑

श्रद्धांजलि

राजवीर सिंह चौधरी

पिछले दिनों श्री राजवीर सिंह चौधरी का निधन हो गया। राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में निदेशक के रूप में श्री राजवीर जी का कार्यकाल बहुत महत्वपूर्ण रहा था। हमने एक कर्मठ साथी खो दिया है।

समिति परिवार उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

ॐ शांति, शांति, शांति।

इतने महान देश में ऐसे भी लोग हैं।

जिनके घरों में भूख है, तंगी है, रोग हैं।

बच्चों के चेहरे ज़र्द हैं, माएं उदास हैं।

इक ओर नाच रंग है, इक ओर सोग है।

सुबहों के आस पास क्यों रातें बिखरती हैं।

गुलशन के कुछ करीब क्यों कलियां उजड़ती हैं?

– कश्मीरी लाल जाकिर

मौलश्री के संग...

❑

रमेश थानवी

मेरे अधिसंख्य मित्र और परिजन यह जानते हैं कि मैं मानसरोवर में रहता हूं। यहां जमीनी-तल्ले पर एक फ्लैट है। हाउसिंग बोर्ड का फ्लैट। बड़े भाई सरीखे श्री एम.एल. मेहता की वजह से यह फ्लैट आसानी से मिल गया था। मगर इसका पैसा जुटाने में ऐड़ी-चोटी का पसीना बह गया था। कई मित्रों की मदद से संभव हुआ कि हम इस फ्लैट में आकर बस गये। यहां बसने में भाई श्री रणजीत सिंह कूमट की भी बहुत मदद रही। वह भी भुलायी नहीं जा सकती।

मैं बहुत चकित था कि जयपुर में मेरा भी कोई मकान हो गया है। इस मकान के ऊपर बना फ्लैट किसी ओर का था और फिर किसी ओर का हो गया। मालिक तो वैसे भी ऊपर वाला ही होता है। अब भी वो ऊपर वाले हैं तो रहेंगे ही । अजब इत्तफाक है कि ऊपर वालों को आये बीस बरस से ऊपर हो गये हैं, मगर मैं उनका पूरा नाम भी नहीं जान सका। शुद्ध शहरी सभ्यता में ऐसा ही होता है। यह पढ़े-लिखे लोगों की संस्कृति है।

जो बात कहने के लिए मैंने यह लिखना शुरू किया है वह असल बात यह है कि इस जमीनी-तल्ले के सामने मैंने मेरी पुरानी किसी स्मृति को जिन्दा करते हुए मौलश्री का एक वृक्ष लगाया था। छोटा पौधा था, पनपते पनपते विराट वृक्ष हो गया, लेकिन उसको अब तक जिन्दा रखने में मुझे बहुत जोर पड़ा है।

मौलश्री का पेड़ जिन्दा है और उसके साथ वे स्मृतियां भी जिन्दा है जिनको याद करते हुए मैंने यह वृक्ष लगाया था। बात लगभग चालीस बरस पुरानी है। मैं किसी कार्यशाला में बीस दिन के लिए साक्षरता निकेतन, लखनऊ गया था। तब वहां भाई वीरेन्द्र त्रिपाठी थे, शीलाजी थीं और साक्षरता निकेतन के निदेशक भाई द्वारिकाप्रसाद महेश्वरी भी थे। उन लोगों के साथ मुश्ताक अहमद साहब, भाई कश्मीरी लाल जाकिर साहब कई लोग थे। मुझे जिस परिसर में ठहराया गया था वह लगभग एक गोल ईमारत थी और उस ईमारत के बीच में चार चौक थे। चारों चौकों के बीच में एक-एक मौलश्री का वृक्ष खड़ा था। जून-जुलाई का ही महीना था और

यह मौसम मौलश्री के फूलने का मौसम होता है।

मौलश्री के चारों वृक्ष फूलों से गदराये लदे थे। रोज-रात को झर-झर कर फूलों का कालीन बिछ जाता था। ऊपर पानी की बूंदे गिरने से पूरा परिसर एक मादक महक से भरा हुआ था।

मेरे कमरे में मेरे साथ भारत के प्रसिद्ध कलाकार/चित्रकार बिभाष दास ठहरे थे। बिभाष बहुत बार इस भीनी मादक खुशबू में खो जाते थे। एक दिन अपने आप कहने लगे थे कि किसी जमाने में बनारस में इसी वृक्ष के नीचे किसी लड़की से प्रेम करना उनको बहुत अच्छा लगा था। उनके मन में उन दिनों की स्मृतियां थीं और इन दिनों की स्मृति मेरे मन में घर कर रही थी। एक तरफ साक्षरता निकेतन का हरा-भरा परिसर और फिर मौलश्री की महक वाला यह हॉस्टल सब कुछ मेरे मन में गहरे कहीं उतर रहा था।

इसके साथ ही उतर रही थी ग्रामीण पाठकों के लिए पुस्तकें लिखने की वे सारी बातें, बहसें और नाना तकनीकों और विधियों के रंग-रूप। मैं एक शिक्षण प्रक्रिया से गुजर रहा था। बहुत कुछ नया था। जिसे मैं सहेज लेना चाहता था।

इतनी सब बातों को मन में लिये मैंने मेरे घर के आगे मौलश्री का एक पौधा रोप दिया। वह आज विराट वृक्ष बनकर मेरे घर के बाहर और भीतर रोज रात को फूलों का एक गलीचा बिछा देता है। इन फूलों की महक में वीरेन्द्र त्रिपाठी याद आते हैं उनका उजला धुला पहनावा और उनके नजरिये की स्पष्टता अब तक मेरे साथ है। मौलश्री का वृक्ष और इसके फूलों की महक साक्षरता निकेतन में सीखे गये पाठ सब कुछ पुनः पुनः जीवित हो उठते हैं। बहुत बार मन होता है कि बिभाषदास को बुलाऊं और कहूं कि आओ अब दो क्षण मेरे साथ इस वृक्ष के नीचे बैठ जाओ। मगर बिभाष इतने बीमार और अशक्त हैं कि मैं दिल्ली से उन्हें ला भी नहीं सकता। वे शायद पिचहत्तर के पार हो गये हैं और मैं भी कल पिचहत्तर पार कर लूंगा।

बीतती-ढलती उम्र के साथ रोज सवेरे पुरातन स्मृतियां नित-नवीन हो जाती हैं। उनमें वही नेह है, उनमें वही छोह है और उनमें फिर से नित-नयी ऊर्जा देने की सामर्थ्य है। उतनी ही जितनी इस वृक्ष में कूट-कूट कर भरी हैं, हर रात लाख पचास हजार फूल खिलाने की ऊर्जा। मौलश्री झरता है तो मुझे लगता है कि यह वृक्ष अपना सब कुछ दे देना चाहता है। महक भी, फूल भी और फूलों के साथ पुनः पुनः जीवित कर देने वाली ऊर्जा भी।

सोचता हूं कि कितना कुछ जुड़ा रहता है एक गाछ के साथ। एक वृक्ष के साथ। अगर हम उसके साथ हो लें तो। नितांत निराला होता है एक वृक्ष का साथ और उस वृक्ष के साथ जुड़ी तमाम स्मृतियों का साथ। मैं जब मौलश्री के साथ होता हूं तो मुझे शेफाली का स्मरण हो आता है। शेफाली हरसिंगार के वृक्ष का नाम है। और मुझे याद आ जाता है विद्या निवास मिश्र का लिखा वह ललित निबन्ध 'शेफाली झर रही है।' हरसिंगार या शेफाली के फूल पूजा के दिनों में झरते हैं तब धरती की छाती पर केसरिया चादर बिछ जाती है। सुगंध से सारा वातावरण महक उठता है। इस महक में एक सनातन अर्चना का आभास होता है। मुझे लगता है कि पूजा के दिनों में पांव में आलता लगाये हुए, सीमंत में लाल सुर्ख सिंदूर लगाये हुए, भाल पर बड़ी बिंदी सिंदूर की लगाये हुए और लाल पट्टी की साड़ी पहने हुए तमाम बंगाली औरतों के साथ मैं भी दुर्गापूजा में शरीक हो गया हूं। आज जब मौलश्री की चादर बिछे देखता हूं तो मैं फिर अर्चना के इस भाव से अभिभूत हो जाता हूं और फिर अपनी स्मृतियों में खो जाता हूं। जहां बहुत सारे लोग मेरे साथ होते हैं, मगर उनमें से अब कोई भी नहीं है। मैं फिर इस अकेले खड़े मौलश्री के तले से एक नयी यात्रा शुरू करता हूं। फिर से अकेला। सुवास के संग। आगे मेरे सामने फिर पूरा लोक-जीवन है। वहां लोग हैं। आहत और क्षत-विक्षत। वही हताशा। वही निराशा। वही विपन्नता। सब कुछ चुनौती देता हुआ, मगर फिर भी बाहें पसार कर मुझे बुलाता हुआ। मैं आश्वस्त हो जाता हूं कि लोक मुझे थाम लेगा। मेरे माथे पर हाथ रखकर फिर मुझे नयी ऊर्जा से भर देगा कि मैं उसी लोक के काम आ सकूं। ❑

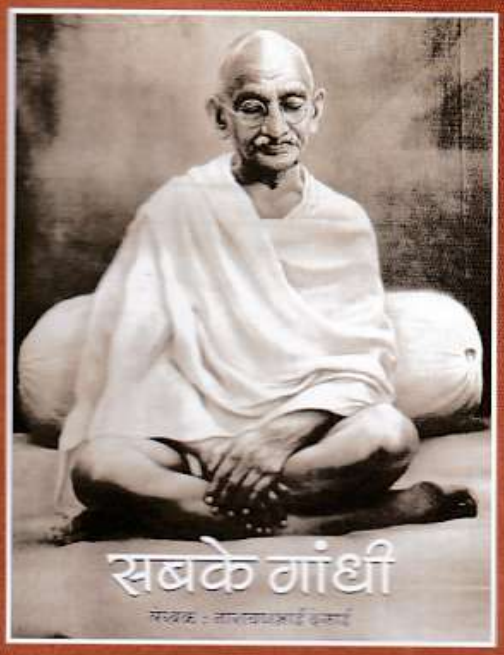

सहयोग राशि के लिए
बैंक विवरण

BANK OF BARODA
Rajasthan Adult Education Association
Branch Name : IDS Ext. Jhalana Jaipur
I.F.S.C. Code : BARB0EXTNEH
(Fifth Character is zero)
Micr Code : 302012030
Acct.No. : 98150100002077

सबके गांधी

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र,
जयपुर–302004

१२ पुस्तकों के एक सैट की सहयोग राशि रूपये ५००/– मात्र डाक खर्च अलग से देय होगा।

स्वत्वाधिकारी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा कुमार एंड कम्पनी, जयपुर में मुद्रित तथा ७–ए, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर–३०२००४ से प्रकाशित। संपादक – रमेश थानवी

अनौपचारिका : पृष्ठ–२८ मई–जून, २०२० (संयु.) रजिस्ट्रार ऑव न्यूज पेपर, नई दिल्ली के द्वारा पंजीकृत मासिक पत्रिका RNI 43602/77 ISSN No. 2581-981X